जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा 'बोधि' व्याख्यानमाला का आयोजन

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में अहिंसा निलयम, प्रज्ञा सभागार, गंगेज गार्डेन, हावड़ा में समायोजित **समाजभूषण श्रीचन्द रामपुरिया व्याख्यानमाला 'बोधि'** में समुपस्थित विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की विदुषी शिष्या साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा – विश्व के दर्शनों में जैन दर्शन का अपना विशिष्ट स्थान है। यह एक वैज्ञानिक दर्शन है। ऐसी व्याख्यानमालाओं का मुख्य लक्ष्य है चेतना का परिष्कार। आज विश्व में हिंसा और आपाधापी का जो दौर चल रहा है उसे पीछे उत्प्रेरक है उसकी स्वार्थीचेतना। अध्यात्म व्यक्ति को स्वार्थ से परार्थ की ओर प्रस्थित करता है। जैनदर्शन ने सम्यक्ज्ञान, सम्यक्दर्शन और सम्यक् चरित्र के रूप में अध्यात्म को व्याख्यायित किया है। वह किसी परम्परा की बपौती नहीं है।

जैनविद्यामनीषी स्व. श्रीचंदजी रामपुरिया के जीवन में विद्या के साथ विनय साकार रूप में दृष्टिगत होता था। ग्यारह वर्ष की बालवय से उन्होंने स्वयं को सतत स्वाध्याय के लिए समर्पित कर दिया। श्रोता उनके जीवन से नई प्रेरणा लेंगे।

व्याख्यानमाला की प्रवक्ता डॉ. साध्वी योगक्षेमप्रभाजी ने **'तेरापंथ की साहित्य साधना में रामपुरिया जी के योगदान'** का विश्लेषण करते हुए कहा – श्रावक वह होता है जो शीलवान, गुणवान, प्रवचन प्रभावक, गुरु सेवा में लीन, सहज, सरल एवं व्यवहार निपुण हो। श्रीचंद जी रामपुरिया श्रावकत्व की इस कसौटी के अनुरूप थे। तेरापंथ के विशाल साहित्य का अवगाहन उन्होंने अनेक बेशकीमती रत्नों को बटोरा। तेरापंथ संख्या की दृष्टि से लघु होते हुए भी साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी है। आगमों के संपादन, अनुवाद, व्याख्या आदि की दृष्टि से जो कार्य हुआ है वह अपने आपमें अद्वितीय है। इसके प्रकाशन में महासभा का अपना योगदान है तो रामपुरिया जी की सेवाएं भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। उन्होंने तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु, जयाचार्य, आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के विशाल साहित्य की अवगति दी।

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं समारोह के मुख्य वक्ता डॉ. अरुण अवस्थी ने **'जैन धर्म एवं उसका अन्य धर्मों पर प्रभाव'** विषय पर गंभीर विश्लेषण करते हुए कहा – जैनधर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है। इसके बीज दुनिया के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में मिलते हैं। आदि तीर्थंकर ऋषभदेव को सनातन, यहूदी, ईसाई आदि धर्मों ने मान्य किया है।

जैन धर्म में अहिंसा, करुणा, मैत्री आदि तत्त्वों पर बहुत बल दिया गया है। अहिंसा की जो सूक्ष्मता जैन दर्शन में प्रतिपादित हुई है वह अन्यत्र मिलनी दुलर्भ है। जैन धर्म विश्व का जीवंत दर्शन है। जहां–जहां अहिंसा, अपरिग्रह आदि का स्वर मुखर होता है वहां जैनधर्म–दर्शन स्वतः आ जा जाता है। मैंने अपनी विदेश यात्राओं में यहूदियों, इसाइयों आदि के द्वारा प्रखरता से यह सुना है।

भारत के शीर्षस्थ साहित्यकार श्री कृष्णविहारी मिश्र ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा– भारत के गौरवशाली अतीत में अध्यात्मिविदों का महत्वपूर्ण योगदान है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ इस सदी के ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने मानवजाति को स्वस्थ चिन्तन व स्वस्थ जीवन के लिए अणुव्रत, अहिंसा प्रशिक्षण जैसे तत्व प्रदान किए। गांधीजी ने विश्व के सम्मुख अहिंसा का जो प्रायोगिक दर्शन प्रस्तुत किया, उसके पीछे जैनधर्म के आदर्शों का स्पष्ट प्रभाव उनके जीवन में परिलक्षित होता है। श्रीचंदजी रामपुरिया के जीवन में श्रीग्रंथ के माध्यम के अतिरिक्त वे गांधीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित थे। उन्होंने गांधी को अपनी लेखनी का विषय बनाया।

समारोह का शुभारंभ साध्वी लावण्यप्रभाजी द्वारा समुच्चरित आगम गाथाओं से हुआ। आगंतुक महानुभावों का स्वागत महासभा के महामंत्री श्री बिनोद चोरड़िया ने किया। महासभा के निवर्तमान अध्यक्ष श्री राजकरन सिरोहिया ने मोमेंटो से सम्मान करते हुए व्याख्यानमाला की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। श्री पारस बोथरा ने विद्वानों का परिचय प्रस्तुत किया। दक्षिण हावड़ा तेरापंथ सभा की ओर से समागत अतिथियों का साहित्य प्रदान कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन महासभा के राष्ट्रीय संयोजक श्री भंवरलाल सिंघी ने कुशलतापूर्वक किया। धन्यवाद ज्ञापन सभा के मंत्री श्री महेन्द्र कोचर ने किया। कार्यक्रम की समायोजना में व्याख्यानमाला के संयोजक श्री जतनलाल रामपुरिया ने सक्रिय भूमिका निभाई।